प्रशंसा नहीं, प्रस्तुति करो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

समाज में व्यक्ति को जो सम्मान प्राप्त होता है उससे वह प्रोत्साहित होता है। प्रोत्साहन मनुष्य को शक्ति प्रदान करता है। इससे समाज में मनुष्य की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। समाज में विभिन्न क्षमता वाले लोग रहते हैं। कुछ लोग धनी होते हैं, कुछ लोग निर्धन होते हैं और कुछ लोग सामान्य होते हैं। समाज की सेवा भी कई प्रकार से की जा सकती है। तन से सेवा, मन से सवा और धन से सेवा का विधान समाज में है। शारीरिक सेवा से निर्माण कार्य होता है। किसी के पास धन नहीं है तो वह तन से सेवा कर सकता है। जिसके पास धन है वह समाज के निर्धन व्यक्तियों को धन से सेवा दे सकता है। मन की सेवा अर्थात अच्छे विचारों को समाज में उत्पन्न करना चाहिए।

समाज में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों सोच वाले व्यक्ति होते हैं। नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को सही मार्ग और सही दिशा दिखाना अच्छे सोच वालों का कर्तव्य है। समाज में अच्छे कार्य की प्रशंसा और बुरे कार्य की निंदा होनी चाहिए। इससे अच्छा कार्य करने वालों का उत्साह बढ़ता है। समाज का हर व्यक्ति प्रतिष्ठा प्रिय होता है। प्रतिष्ठा का अर्थ है सम्मान, मान–मर्यादा की प्राप्ति। प्रतिष्ठा कब मिलती है? जब व्यक्ति अच्छा कार्य करता है, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करता है तब समाज में वह प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। सामाजिक कार्य के साथ अपनी प्रतिष्ठा को जोड़ो तो अच्छा है।

मनुष्य के लिए स्वार्थ से अच्छा परार्थ और परार्थ से अच्छा परमार्थ है। आत्मकेन्द्रित होने से मानव को समाज में प्रतिष्ठा नहीं मिलती। जब परोपकार या समाजहित के लिए कार्य किया जाता है तो मनुष्य का मूल्यांकन समाज करता है। प्रतिष्ठा स्वयं नहीं प्राप्त होती। बल्कि प्रतिष्ठा समाज द्वारा दी जाती है। प्रतिष्ठा अच्छी चीज है किन्तु प्रतिष्ठा का व्यामोह बुरी चीज है। प्रतिष्ठा से इज्जत बढ़ती है। प्रतिष्ठा व्यक्ति के कार्य का प्रोत्साहन है। जो समाज और

राष्ट्र के लिए अच्छे कार्य करते हैं उन्हें सम्मान देने के लिए भारत सरकार भी भारत के सबसे बड़े पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित करती है।

भारत सरकार के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को अनेक पुरस्कार दिये जाते हैं। ये सम्मान व्यक्तियों के कार्यों के आधार पर उनके मूल्यांकन के पश्चात् दिया जाता है। कोई स्वयं यह पुरस्कार नहीं प्राप्त करता, बल्कि यह पुरस्कार प्रोत्साहन के लिए दिया जाता है। भारत में जितने भी भारत रत्न प्राप्त कर्त्ता हैं उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करके देश को ऊँचाई पर पहुँचाया है। लोककल्याण के लिए जो कार्य करते हैं उनका मूल्यांकन स्वयं हो जाता है। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर में प्रतिष्ठा का व्यामोह नहीं था। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जैसे सिद्धान्तों का उपदेश देकर जनता को सन्मार्ग प्रदान किया। जीवन में अनेक कष्टों को सहकर भी लोककल्याण के लिए कार्य किया। इसी का परिणाम हैं कि आज भी उनके सिद्धान्तों को लोग जीवन में पालन करते हैं।

वर्तमान सन्दर्भ में यदि देखा जाये तो मनुष्य स्वार्थी हो गया है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का नुकसान करने में भी नहीं हिचकता। आज गरीबों और अमीरों के बीच खाई बढ़ती जा रही है। सभी को जीने और सुख प्राप्त करने का अधिकार है। जीने का मतलब यह नहीं है कि झुग्गी–झोपड़ियों में जीवन–यापन किया जाये। रोटी, कपड़ा, मकान और चिकित्सा जीवन की बुनियादी सुविधाएं है। कम से कम ये वस्तुएं सभी को उपलब्ध हो। किसी भी व्यक्ति को किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े। असामनता दूर होनी चाहिए। सभी लोग समानपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

योग्यता के अनुसार सबको कार्य करने का मौका मिलना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो प्रतिष्ठा का व्यामोह नहीं रहेगा। आजकल प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए लोग बहुत सा दिखावा करते है। दिखावे से प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। प्रतिष्ठा अहंकार को जन्म देती है। अहंकारी व्यक्ति दूसरों को तृण के समान समझता है। उसके लिए दूसरों के जीवन का कोई मूल्य नहीं है। हमारे देश में ऐसे अनेक महापुरुष हुये है जिनके पीछे प्रतिष्ठा चलती थी। इस सम्बन्ध में पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। एक उच्च कोटि के साहित्यकार होते हुये भी उन्होंने प्रतिष्ठा को कोई महत्व नहीं दिया। आज

जब उनका मूल्यांकन किया जाता हैं तो प्रथम पंक्ति के साहित्यकारों में उनकी गणना होती है। उन्होंने समाज के दबे कूचले वर्ग के लिए आवाज उठाई। समाज में निम्नवर्ग के लोगों को सम्मान दिलाने के लिए उनका साहित्य समर्पित है। ऐसे अनेक महापुरुष हुये है जो समाज के लिए जिये और समाज के लोगों के कंठहार बन गये।

मानव सभी प्राणियों श्रेष्ठ है। दूसरों को सम्मान देने से सम्मान मिलता है। इस भावना से यदि सम्मान की प्राप्ति होती है तो वही वास्तविक सम्मान है। जियो और जीने दो, आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो हमें अच्छा नहीं लगता वैसा व्यवहार हमें दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए, की भावना मनुष्य के भीतर होनी चाहिए। समाज का ऋण हमारे ऊपर है, उसको सेवा द्वारा उतारा जा सकता है।